विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-१४/०७/२०२० षष्ठ: पाठ: भ्रान्तो बाल: (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

तदा स बाल: 'कृतमनेन मिथ्यागर्वितेन कीटेन 'इत्यन्यतो दत्तदृष्टिश्चटकं चञ्च्वा तृणशलाकादिकमाददानमपश्यत् ।

उवाच च –"अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि ।एहि क्रीडाव: । त्यज शुष्कमेतत् तृणम् स्वादूनि भक्ष्यकवलानि

ते दास्यामि " इति । स तु 'नीड: कार्यो बटद्रुशाखायां तद्यामि कार्येण ' इत्युक्त्वा स्वकर्मव्यग्रो बभूव ।

शब्दार्था:-

भूयोभूय: - बारबार , मिथ्यागर्वितेन - झूठे गर्व वाले , कीटेन -कीडे से , चञ्च्वा – चोंच से , चटकम् -पक्षी , आददानम् – ग्रहण करते हुए को , स्वादूनि – स्वादिष्ट , भक्ष्यकवलानि - खाने के लिए उपयुक्त कौर (ग्रास) , ते – तुम्हे

नीड: -घोंसला , बटद्रुशाखायाम् - बरगद के पेड़ की शाखा पर , यामि - (मैं)जा रहा हूं , स्वकर्मव्यग्र: - अपने काम में व्यस्त , उक्त्वा – कहकर , बभूव - हुए , तृणम् - तिनका (घास) , त्यज – छोड़ दो , एहि-आओ

अर्थ- तब उस बालक ने अपने मन में 'व्यर्थ में घमंडी इस कीड़े को छोड़ो ' ऐसा सोचकर दूसरी ओर देखते हुए एक पक्षी को

चोंच से घास तिनके आदि उठाते हुए देखा । वह(बच्चा)उस पक्षी बोला-"अरे चिड़िया के बच्चे ! तुम मुझ मनुष्य के मित्र बनोगे? आओ खेलते हैं।इस सूखे तिनके छोड़ो ,मैं तुम्हें स्वादिष्ट वस्तुओं के ग्रास दूंगा।" "मुझे बरगद के पेड़ की शाखा पर

घोंसला बनाना है। अत: मैं काम से जा रहा हूं "- ऐसा कहकर वह अपने काम में व्यस्त हो गया।